25 मई, 1983
नई दुनिया

सिओल-चीन : विमान अपहरण की संधि

शशिधर खाँ

पिछले दिनों दक्षिण कोरिया द्वारा एक चीनी विमान को अपहरण कर्ताओं के चंगुल से मुक्त करने और उसके बाद चीन के नागरिक उड्डयन निदेशक शेन तु की सिओल यात्रा का प्रचार अखबारों में खूब हुआ। पूरे चालीस साल बाद किसी चीनी अधिकारी ने दक्षिण कोरिया की यात्रा की।

तीसरी दुनिया के इस सनसनीखेज माहौल में विमानों का अपहरण वैसे आम बात हो गई है। एक भी दिन ऐसा नहीं जाता, जब अपहरण की दो-चार खबरें न रहती हों। लेकिन यह अपहरण पिछले वर्षों में हुए कई अपहरणों से बहुत मामलों में भिन्न था और विश्व राजनीति के रंगमंच पर इसकी व्यापक चर्चा हुई।

इस माह के प्रथम सप्ताह में शेन तु ने अपनी राजधानी बीजिंग छोड़ी और सिओल पहुँचे। विमान से उतरते ही उन्होंने हवाई अड्डे पर कहा, "चीन की समस्त जनता ने मुझे यह अधिकार देकर भेजा है कि मैं सिओल के अधिकारियों से मिलकर समस्या का समाधान निकालूँ और एक मैत्री-संधि पर हस्ताक्षर करके स्वदेश लौटूँ।"

इसके तुरंत बाद सिओल सरकार के एक वरिष्ठ प्रवक्ता ने कहा, "मानवीय संचेतनाओं के आधार पर हमें बीजिंग की बात मान लेने में कोई आपत्ति नहीं है, क्योंकि इसके बाद दोनों देशों के बीच होने वाले मधुर संबंध से एक नए आयाम की शुरूआत का अनुभव दो पड़ोसी कर सकेंगे।"

दक्षिण कोरिया की लड़ाई की समाप्ति के बाद इन दोनों देशों के बीच होने वाली राजनयिक स्तर पर यह पहली बातचीत है। १९५०-५३ में हुई दोनों के बीच भयंकर लड़ाई के बाद बातचीत का आदान-प्रदान बंद था और इनका कारण था सिओल का चीनी साम्यवादी खेमे से एकदम अलग होना। सिओल सोवियत रूस के खेमे में है। सात मई को शेन तु सिओल पहुँचे और उसी दिन चीनी विमान के १०५ यात्रियों को (जिनमें ९३ यात्री, दो एयर होस्टेस और दस चालक एवं अन्य तकनीकी कर्मचारी थे) मुक्त करके स्वदेश भिजवा दिया गया। दक्षिण कोरिया के उपविदेश मंत्री कांग शेम्युंग ने अपने चीनी अतिथि का गर्मजोशी से स्वागत किया और विमान अपहरण के कारण उत्पन्न विवाद को संयुक्त राष्ट्रसंघ के तत्वावधान में हेग में हुए समझौतों को ध्यान में रखकर हल करने पर बल दिया। शेम्युंग ने विमान अपहरणकर्ताओं को दंड देने का चीनी आग्रह मानने से इंकार कर दिया और स्पष्ट शब्दों में अपने देश की अदालत में इन पर मुकदमा चलाने की घोषणा की। इस घोषणा पर चीनी अधिकारियों द्वारा दुःख प्रकट किए जाने पर कोरिया सरकार ने भविष्य में इस मसले पर बातचीत करने की इच्छा जाहिर करके टाल दिया। बहरहाल चीन अभी खुद कोरिया से संबंध अच्छे बनाए रखने का इच्छुक है। इसलिए बिना कोई प्रतिक्रिया व्यक्त किए अधिकारियों ने संतोष कर लिया।

अब तक चीन ने सिर्फ उत्तर कोरिया को ही मान्यता दी थी। ढेर सारी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं और संयुक्त राष्ट्रसंघ में दो-दो प्रतिनिधियों के होने के बावजूद चीन दक्षिण कोरिया को मान्यता देने के प्रश्न को बराबर टालता रहा था। इसे अपहरण कांड का तात्कालिक असर माना जाना चाहिए कि मान्यता प्रदान करने की घोषणा कर दी गई है। दोनों देशों के प्रतिनिधियों ने कई आर्थिक संधियों पर भी हस्ताक्षर किए हैं और भविष्य में भी एक-दूसरे की सहायता करने का आश्वासन शेन तु ने दिया।

दरअसल चीनी अधिकारी दक्षिण कोरिया के स्वागत-सत्कार से इतने प्रसन्न हुए कि इस छोटे से गैर-साम्यवादी देश से संबंध मधुर बनाने में ही भलाई समझी गई। सिओल के सुरक्षा अधिकारियों ने ट्रिडेंट जेट में सवार सभी यात्रियों की सुरक्षा एवं अन्य आवश्यकताओं का भरपूर खयाल रखा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि जब ट्रिडेंट जेट उत्तर कोरिया की सीमा से गुजर रहा था, यह जानते हुए भी कि यह विमान अपहरणकर्ताओं के चंगुल में है, उसके अधिकारियों ने अपने अंतर्राष्ट्रीय प्योंग्याग हवाई अड्डे पर उतारने के लिए बल प्रयोग नहीं किया। चीन को उत्तर कोरिया का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा। एशिया के इस भू-भाग में चीन अधिकांश राज्यों से अपने संबंध अच्छे बनाए रखना चाहता है। उत्तर कोरिया के रुख ने स्वाभाविक रूप से चीन को दक्षिण कोरिया के नजदीक ला दिया।

विश्व के राजनीतिक प्रेक्षक अनुमान लगा रहे हैं कि अपने यात्रियों को मुक्त कराने के लिए शेन ने यह चाल खेली है। लेकिन चीन की योजना दूरगामी है।